उथल-पुथल में डूबी दुनिया: अंतिम दिनों की भविष्यवाणी

यदि आज उठा लिया जाना (Rapture) नहीं होता और आप पीछे रह जाते हैं, तो यह जान लीजिए: इस संसार को अपने अंत तक पहुँचने में केवल सात वर्ष शेष होंगे। जो कुछ आज स्थायी प्रतीत होता है, वह सब मिट जाएगा। ये सात वर्ष दानिय्येल की भविष्यवाणी की अंतिम “सप्ताह” के समान हैं:

(दानिय्येल 9:24)
“तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए
गए हैं, ताकि अपराध का अंत किया जाए, पापों पर मुहर लगाई जाए, अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, सदा की धार्मिकता लाई जाए,
दर्शन और भविष्यवाणी पर मुहर लगे और परम पवित्र का अभिषेक किया जाए।”

अब केवल एक सप्ताह—अर्थात सात वर्ष—शेष है, जो अंतिम महान क्लेश का समय है।

सात वर्षीय क्लेश की संरचना

यह सात वर्ष की अवधि दो भागों में बँटी होगी, प्रत्येक साढ़े तीन वर्ष की।

1. पहले साढ़े तीन वर्ष

इस अवधि में मसीह-विरोधी (Antichrist) सत्ता में आएगा, अनेक राष्ट्रों (जिसमें इस्राएल भी शामिल है) के साथ एक वाचा करेगा और अपनी शक्ति को मजबूत करेगा।

पवित्रशास्त्र इसकी पुष्टि करता है:

(दानिय्येल 9:27)
“वह एक सप्ताह के लिए बहुतों के साथ दृढ़ वाचा बाँधेगा; और
उस सप्ताह के बीच में वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द कर
देगा।”

इसी समय प्रकाशितवाक्य 11 में वर्णित दो साक्षी यरूशलेम में भविष्यवाणी करेंगे:

(प्रकाशितवाक्य 11:3)
“मैं अपने दो गवाहों को अधिकार दूँगा, और वे टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यवाणी करेंगे।”

उनकी सेवकाई चिन्हों और न्याय के कार्यों से भरी होगी, और अंततः उनकी मृत्यु पर संसार आनंद मनाएगा—जो परमेश्वर के विरुद्ध मानवता के विद्रोह को दर्शाता है।

धार्मिक दृष्टिकोण:
यह समय परमेश्वर की प्रभुता के अधीन मानव शक्ति की सीमाओं को प्रकट करता है—मसीह-विरोधी भी केवल उतना ही कर सकता है जितना परमेश्वर ने ठहराया है।

2. अंतिम साढ़े तीन वर्ष: महान क्लेश

पहले भाग के बाद मसीह-विरोधी पूर्ण अधिकार ग्रहण करेगा और पशु की छाप (666) को अनिवार्य करेगा।

(प्रकाशितवाक्य 13:16–17)
“उसने छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, स्वतंत्र-दास सब लोगों के दाहिने हाथ या माथे पर एक छाप दिलवाई, ताकि जिसके पास वह छाप न हो, वह न तो खरीद सके और न बेच सके।”

जो लोग इस छाप को स्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें भयानक उत्पीड़न और दीर्घकालीन कष्ट सहना पड़ेगा—यह संसार के झूठे राज्य को ठुकराने का परिणाम होगा।

यीशु ने चेतावनी दी:

(लूका 21:34)
“सावधान रहो कि तुम्हारे मन भोग-विलास, मतवालेपन और संसार
की चिंताओं से बोझिल न हो जाएँ, और वह दिन तुम पर अचानक आ
पड़े।”

धार्मिक दृष्टिकोण:
महान क्लेश परमेश्वर के न्याय और मानव उत्तरदायित्व को उजागर करता है—यह दर्शाता है कि उसकी वाचा को अस्वीकार करने के गंभीर परिणाम होते हैं।

प्रभु का दिन

सात वर्षों के क्लेश के बाद भी न्याय समाप्त नहीं होता। इसके बाद आता है प्रभु का दिन—लगभग 30 दिनों की भयावह अवधि, जिसमें सृष्टि हिल जाएगी:

(आमोस 5:18)
“हाय उन पर जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हैं! यहोवा का

दिन तुम्हारे लिए क्या होगा? वह तो अंधकार होगा, प्रकाश
नहीं।”

उस समय: सूर्य अंधकारमय होगा, चंद्रमा रक्त के समान दिखाई देगा, और तारे आकाश से गिरेंगे (योएल 2:31; प्रकाशितवाक्य 6:12–14)। पृथ्वी फिर से सूनी और उजाड़ अवस्था में लौट जाएगी, जैसे सृष्टि के आरंभ में थी:

(उत्पत्ति 1:2)
“पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अंधकार था।”

धार्मिक दृष्टिकोण:
प्रभु का दिन सृष्टि पर परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रभुता को प्रकट करता है और मानव भ्रष्टता के अंत को दर्शाता है। स्वयं पृथ्वी उसके न्याय की साक्षी बनती है।

मसीह का आगमन और हज़ार वर्षीय राज्य

प्रभु के दिन के बाद मसीह महिमा के साथ लौटेंगे:

(मत्ती 24:30)
“तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और
पृथ्वी के सब गोत्र विलाप करेंगे, और वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।”

दुष्टों का न्याय किया जाएगा और मसीह अपना हज़ार वर्षीय राज्य स्थापित करेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:4–6)।
पृथ्वी पुनःस्थापित होगी—एदन से भी अधिक सुंदर, पाप और मृत्यु से मुक्त।

धार्मिक दृष्टिकोण:
मसीह का आगमन परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता है—न्याय, पुनर्स्थापन और अनंत शांति का चरम बिंदु। यह उद्धार के इतिहास की पराकाष्ठा है।

मुख्य धार्मिक सत्य

1. परमेश्वर की प्रभुता:
मसीह-विरोधी का उदय और क्लेश भी परमेश्वर की योजना के अधीन

हैं।

2. स्वतंत्र इच्छा और उत्तरदायित्व:
मनुष्य को चुनाव की स्वतंत्रता दी गई है, पर प्रत्येक चुनाव
के अनंत परिणाम होते हैं।

3. न्याय और करुणा:
परमेश्वर का न्याय न्यायपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है, और उसकी करुणा उन सब के लिए है जो मसीह को ग्रहण करते हैं।

4. मसीह में आशा:
उद्धार सब के लिए उपलब्ध है, क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो:

(2 पतरस 3:9)
“प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता… पर तुम्हारे कारण धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह कि सब मन फिराव तक पहुँचें।”

तात्कालिक आह्वान

यदि आपने अभी तक मसीह को स्वीकार नहीं किया है, तो आज ही करें। वह आपसे प्रेम करता है, आपको मूल्यवान समझता है, और आपके लिए अनंत जीवन तैयार किया है:

(यूहन्ना 3:16)
“क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश
न हो, परंतु अनंत जीवन पाए।”

दुनिया कांप रही है।
भविष्यवाणियों की चेतावनियाँ स्पष्ट हैं।
उत्तर देने का समय अब है।

मरानाथा।

Share on:
WhatsApp

Print this post